Mechiavelli

मैकियावेली के राजनीतिक चिन्तन को आधुनिक युग के प्रथम राजनी
तिक चिन्तक होने का श्रेय प्राप्त है क्योंकि उसका चिन्तन मध्ययुगीन
परम्पराओं से भिन्न है। मध्य युग के सभी राजनीतिक चिन्तकों का चिन्तन धर्म और
राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों पर केन्द्रित है। किन्तु मैकियावेली के चिन्तन में इन
विषयों का कहीं भी उल्लेख नहीं है। वह केवल इतिहास ऐतिहासिक और बुद्धि प्रधान
तथ्यों के आधार पर अपने सिद्धान्त की रचना करता है। इसलिए मैक्सी ने इसे
सबसे पहला आधुनिक राजनीतिक चिन्तक कह कर पुकारा है। Dunning
के अनुसार "द प्रिंस" सबसे पहली एवं महान रचना है जिसमें मध्ययुगीन
चिन्तन प्रणाली का परित्याग किया गया। इस प्रकार मध्ययुग के लीक से हटकर
Mechiavelli राजनीति के धर्मवाद और नैतिकतावाद का अनुसरण करने के बजाय
शुद्ध व्यवहारवाद का अनुसरण किया। उसने अपने विचारों के प्रतिपादन के लिए अनुभव प्रधान एवं ऐति-
-हासिक पद्धति का प्रयोग किया और उसे सर्वथा एक नया रूप प्रदान
किया और अपने निष्कर्षों की पुष्टि ऐतिहासिक
उदाहरणों से किया।

मैकियावेली के राजनीतिक विचार — मानव स्वभाव की धारणा — मैकियावेली
के अनुसार मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी एवं कायर होता है। मनुष्य किसी से
तभी प्रेम करता है जब उसका स्वार्थ पूर्ण होता है, जब उसका स्वार्थ पूर्ण नहीं होता
तब वह विद्रोह कर देता है। सम्पत्ति पर वह अपने आधिपत्य का आकांक्षी होता है
और इसके लिए छल, प्रपंच आदि को अपनाने से भी नहीं हिचकता है।
मानव स्वभाव के इस धारणा के आधार पर Mechiavelli कहता है कि "कि
शासक को मानव के इस स्वार्थ भावना को ध्यान में रखना चाहिए। प्रेम और भय
ये दो शक्तियाँ मनुष्य को वश में कर सकती हैं। एक आदर्श राजा के लिए
भय का सहारा लेना अधिक श्रेष्ठ है। सच्चा शासक वही है जो सत्य, धोखा,
पक्षपात सब कुछ चले साथ ही लोमड़ी की तरह चालाक एवं शेर की तरह शक्तिशाली
हो। शासक को धर्म और नैतिकता के पालन के बजाए शक्ति के माध्यम से आतंक
कायम करना चाहिए क्योंकि प्रेम और श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित
करने वाला तत्व है।

धर्म नैतिकता तथा राजनीति के सम्बंध के विषय में विचार —
Mechiavelli धर्म को राजनीति से अलग करने वाला प्रथम विचारक था।
उसके पहले यूनानी तथा मध्ययुगीन विचारधारा धर्म एवं नैतिकता पर
आधारित था उसे मैकियावेली ने जानबूझ कर औपचारिक रूप से इन दोनों
को अलग कर दिया।
मैकियावेली के चिन्तन का मुख्य लक्ष्य राज्य का संरक्षण तथा उसका
विस्तार करना था ना कि नैतिक विस्तार। इसलिए वह राज्य एवं व्यक्ति
को एक ही स्तर पर नहीं रखा। वह राजा को नैतिकता के पालन का आदेश
तभी तक दिया जब वह राज्य के हित प्राप्ति में बाधक ना हो जब शासक नैतिकता
के कारण राज्य को असुरक्षित महसूस करे तो तुरन्त उसे साम, दाम, दण्ड, भय
चालबाजी आदि नीति के प्रयोग में जरा भी संकोच नहीं करना चाहिए
उसके अनुसार साध्य की प्राप्ति के लिए साधनों की नैतिकता के चक्कर में
नहीं पड़ना चाहिए।
मैकियावेली सम्पूर्ण मानव संगठनों में राज्य को श्रेष्ठतर मानता है।
जिसका उद्देश्य मानव की रक्षा तथा कल्याण है इसलिए उसके अनुसार
व्यक्ति को उसके समक्ष नहीं रखा जा सकता। उसकी नैतिकता व्यक्ति की
नैतिकता नहीं हो सकती।

आवश्यकतानुसार राज्य द्वारा धर्म विरुद्ध कार्यों का समर्थक होते हुए भी मैकियावेली धर्म को बड़ा उपयोगी मानता है क्योंकि धर्म के भय से भी लोग राज्य की आज्ञा का पालन करते हैं। वह धर्म को राज्य शासन का एक साधन मानता है। फिर वह कहता है धर्म का महत्व है किन्तु बन्धन है —

राज्य सम्बन्धी विचार — मैकियावेली के अनुसार राज्य एक मानवकृत संस्था है जिसे मनुष्य ने अपनी असुविधाओं को दूर करने के लिए बनाया है। राज्य के जन्म का कारण मनुष्य का स्वार्थ माना है और यही कारण है कि उसकी उत्पत्ति ईश्वरीय न होकर सामाजिक शक्ति का परिणाम है। राज्य मनुष्य की दुष्टता और स्वार्थपरता को नियंत्रित करता है।

अरस्तु की भाँति मैकियावेली भी राज्य को अन्य संस्थाओं से उच्चतर स्थान देता है। सभी संस्थाएँ राज्य के प्रति उत्तरदायी हैं, जबकि राज्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है। मनुष्य का सर्वोत्तम कल्याण केवल राज्य ही कर सकता है। अतः व्यक्ति और व्यक्ति समुदायों का यह कर्तव्य है वे राज्य के हितों के समक्ष अपने हितों की चिन्ता न करें और स्वयं को राज्य की सेवा में समर्पित कर दें। राज्य किसी प्रकार के नैतिक आचरण से बंधा नहीं है।

मैकियावेली राज्य को परिवर्तनशील मानता है। वह राज्य को दो भागों में बाँटता है। स्वस्थ राज्य तथा अस्वस्थ राज्य। स्वस्थ राज्य एकताबद्ध और गतिशील होता है तथा उसका जबकि अस्वस्थ राज्य का विकास अवरुद्ध होता है।

'प्रिंस' में मैकियावेली द्वारा बताए गए शासकों का कर्तव्य — मैकियावेली राजतन्त्र का परम समर्थक था है। उसकी मान्यता है कि जिस राज्य में अशान्ति और अव्यवस्था का वातावरण रहता है, वहाँ के लिए राजतंत्रीय शासन प्रणाली सर्वोत्तम होती है अन्यथा वह गणतंत्रीय शासन प्रणाली को सर्वोत्तम शासन ~~मानता~~ मानता था।

मैकियावेली ने प्रसिद्ध पुस्तक 'The Prince' में शासक के कर्तव्यों और आचरणों का विशद वर्णन किया है —

(a) नवीन राजतन्त्र की स्थापना करने के लिए राजा को नये राज्य में अपनी बस्तियाँ बसा लेनी चाहिए और राजधानी बना लेनी चाहिए। साथ ही उसे पड़ोस के शक्तिहीन राज्यों के साथ मित्रता और शक्तिशाली राज्यों के विरुद्ध मोर्चा बना लेनी चाहिए।

(b) जिस राज्य पर अधिकार करना हो वहाँ के राजा के सपरिवार नष्ट कर देना चाहिए तथा सामन्तों पर पूर्ण नियंत्रण कायम कर लेना चाहिए।

(c) जीते हुए राज्य में एक राजधानी स्थापित कर अपने कानून के अनुसार शासन करना चाहिए।

(d) राज्य पर अधिकार करने के लिए क्रूरता का अनुसरण कर बाद में शासन के लिए दयालुता का ढोंग अपनाना चाहिए।

(e) राज्य की सुरक्षा के लिए राजा को किलाबन्दी पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

(f) राजा में शेर और लोमड़ी दोनों लक्षण होना चाहिए।

(g) राज्य की रक्षा के लिए राजा को हर साधन अपनाना चाहिए।

(h) नैतिकता तथा धर्म के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। अप्रिय कार्य अधिकारियों को सौंपकर सम्मानित कार्य स्वयं करना चाहिए।

- वैदेशिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन नीति अपनाना चाहिए। उसे अपने से अधिक
शक्तिशाली राज्यों के साथ हमेशा सतर्कता बरतना चाहिए। प्रयोजन या शक्ति
दूसर पड़ोसी राज्यों को मित्र बना लेना चाहिए और कमजोर मित्रों को कमजोर
बनाकर राज्य पर कब्जा कर लेना चाहिए।

- Discourses में Mechiavelli ने गणतंत्रीय शासन का समर्थन किया है।
उनका कहना है कि गणतंत्रीय शासन प्रणाली वहाँ सर्वाधिक सफल होता
है जहाँ सम्पत्ति के दृष्टि से लोगों में अधिकांश समानता होती है, शान्ति
(a) एवं व्यवस्था बनी रहती है। गणतन्त्र निम्नलिखित दृष्टि से राजतन्त्र से श्रेष्ठ
गणतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को शासन में भाग लेने पूर्ण अधिकार
होता है, जबकि राजतन्त्र एक व्यक्ति को या परिवार को
(b) गणतन्त्र में सरकार स्थिर स्थायी होता है और तीव्र गति से प्रगति
करता है।
(c) गणतन्त्रीय प्रणाली में विदेशों से की गई सन्धियाँ टिकाऊ होती हैं
(d) क्योंकि इसके पीछे जनमत की शक्ति रहती है।
पूर्ण रूप से जनता का निर्णय राजा के निर्णय से अधिक श्रेष्ठ होता
है क्योंकि जनता में अधिक विवेक, दृढ़ता पायी जाती है।
Mechiavelli ने गणतन्त्र के दोषों को भी बताया। गणतन्त्र के दोष यह है
है कि इसमें संकटकाल से सामना करने की शक्ति नहीं होती। क्योंकि
संकट के समय शासन सत्ता शक्तिशाली लोगों के हाथों में होना चाहिए
इसमें अधिकारी वर्ग निरंकुश हो जाते हैं अतः उनपर पूर्ण नियंत्रण होना
चाहिए। इसमें दलगत बुराईयाँ भी होती हैं।

आलोचना :- उन्होंने मानव में सिर्फ आसुरी प्रवृत्ति को ही दर्शाया
और उसे घोर स्वार्थी माना। पर यह उनकी भूल है क्योंकि मानव में
स्वार्थ के साथ त्याग, क्रूरता के साथ प्रेम, सहयोग की भावना भी पाई
जाती है। मैकियावेली ने ऐतिहासिक पद्धति का गलत प्रयोग किया है।
उन्होंने इतिहास के निष्पक्ष अध्ययन अध्ययन के आधार
पर अपने सिद्धान्तों का निरूपण नहीं किया है बल्कि पूर्व कल्पित
निष्कर्षों के लिए इसका प्रयोग किया है। मैकियावेली ने राजनीति
के क्षेत्र में धर्म एवं नैतिकता का घोर उल्लंघन किया है। शुद्ध राजनीति
बिना नैतिकता के निराधार है। राजनीति जब नैतिकता से मुक्त
हो जाती है तो झूठ, विश्वासघात, आदि समाहित हो जाता है। समाज
में अराजकता आ जाती है और सरकार अस्थिर हो जाती है। नैतिकता
का दोहरा मानदण्ड एक शासक के लिए दूसरा जनता के लिए,
यह मैकियावेली का महान दोष है।

- Mechiavelli का राज्य संबंधी विचार भी दोषपूर्ण है। उसने
राज्य के स्वरूप आदि पर कोई प्रकाश नहीं डाला। वास्तव में वह
एक राजनीतिक विचारक नहीं बल्कि व्यवहारिक राजनीतिज्ञ था
गेटेल ने ठीक ही कहा है कि "उनका सिद्धान्त राज्य के संरक्षण

(3)

- वैदेशिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन नीति अपनाना चाहिए। उसे अपने से अधिक
शक्तिशाली राज्यों के साथ हमेशा सतर्कता बरतना चाहिए। प्रलोभन या शक्ति
द्वारा पड़ोसी राज्यों को मित्र बना लेना चाहिए और पुनः मित्रों को कमजोर
बनाकर राज्य पर कब्जा कर लेना चाहिए।

- Discourses में Mechiavelli ने गणतंत्रीय शासन का समर्थन किया है।
उसका कहना है कि गणतंत्रीय शासन प्रणाली वहाँ सर्वाधिक सफल होता
है जहाँ सम्पत्ति व स्थिति के लोगों में अधिकांश समानता होती है, शान्ति
(a) एवं व्यवस्था बनी रहती है। गणतन्त्र निम्नलिखित दृष्टि से राजतन्त्र से श्रेष्ठ है -
गणतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को शासन में भाग लेने पूर्ण अधिकार
(b) होता है, जबकि राजतन्त्र एक व्यक्ति को या परिवार को
गणतन्त्र में सरकार स्थिर स्थायी होता है और तीव्र गति से प्रगति
करता है।
(c) गणतन्त्रीय प्रणाली में विदेशों से की गई सन्धियाँ टिकाऊ होती है
(d) क्योंकि इसके पीछे जनता की शक्ति रहती है।
पूर्णरूप से जनता का निर्णय राजा के निर्णय से अधिक श्रेष्ठ होता
है क्योंकि जनता में अधिक विवेक, दृढ़ता पायी जाती है।
Mechiavelli ने गणतन्त्र के दोषों को भी बताया। गणतन्त्र में दोष यह होता
है कि इसमें संकटकाल से सामना करने की शक्ति नहीं होती। क्योंकि
संकट के समय शासन सत्ता शक्तिशाली लोगों के हाथों में होना चाहिए
इसमें अधिकारी वर्ग निरंकुश हो जाते हैं अतः उनपर पूर्ण नियंत्रण होना
चाहिए इसमें दलगत बुराईयाँ भी होती हैं।

आलोचना :- उसने मानव में सिर्फ आसुरी प्रवृत्ति का ही दर्शन किया
और उसे घोर स्वार्थी माना। पर यह उसकी भूल है क्योंकि मानव में
स्वार्थ के साथ त्याग, क्रूरता के साथ प्रेम, सहयोग की भावना भी पायी
जाती है। मैकियावेली ने ऐतिहासिक पद्धति का गलत प्रयोग किया है।
उसने इतिहास के निष्पक्ष अध्ययन अध्ययन के आधार
पर अपने सिद्धान्तों का निरूपण नहीं किया है बल्कि पूर्व कल्पित
निष्कर्षों के लिए इसका प्रयोग किया है। मैकियावेली ने राजनीति
के क्षेत्र में धर्म एवं नैतिकता का घोर उल्लंघन किया है। शुद्ध राजनीति
बिना नैतिकता के निराधार है। राजनीति जब नैतिकता से मुक्त
हो जाती है तो झूठ, विश्वासघात, आदि समाहित हो जाता है। समाज
में अराजकता आ जाती है और सरकार अस्थिर हो जाती है। नैतिकता
का दोहरा मानदण्ड एक शासक के लिए दूसरा जनता के लिए,
यह मैकियावेली का महान दोष है।

- Mechiavelli का राज्य संबंधी विचार भी दोषपूर्ण है। उसने
राज्य के स्वरूप आदि पर कोई प्रकाश नहीं डाला। वास्तव में वह
एक राजनीतिक विचारक नहीं बल्कि व्यवहारिक राजनीतिज्ञ था।
सेबाइन ने ठीक ही कहा है कि "उसका सिद्धान्त राज्य के संरक्षण

का सिद्धान्त ~~नहीं~~ है न कि राज्य का प्रतिपादन करने वाला सिद्
मैकियावेली और दार्शनिक द्वारा एक शासक को छल-कपट की
दिया जाना अविश्वसनीय है। उनके द्वारा युद्ध तथा साम्राज्य वि
का समर्थन भी वर्तमान युग के विपरीत है।

उपर्युक्त दोषों के बावजूद राजनीति शास्त्र के प्रति मैकियावेली की कई महत्वपूर्ण देन है —

सर्वप्रथम उसने राजनीति को धर्म एवं नैतिकता के बंधन से मुक्त करके धर्म निरपेक्ष राजनीति का प्रतिपादन किया है। गेटेल ने उसे प्रथम 'यथार्थवादी' कहा है। मैकियावेली ने राजनीति के अध्ययन को एक नई दिशा देकर उसे कल्पनावादिता के अभिशाप से मुक्त किया है। और राजनीति में यथार्थवाद की स्थापना की। यद्यपि उसने सम्प्रभुता के सिद्धान्त का समर्थन नहीं किया तथापि राज्य को सर्वोच्च बता कर उसने सम्प्रभुता के आविर्भाव की भूमि तैयार कर दी। राष्ट्रवाद के विकास में भी उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सामन्तवाद के प्रति घृणा, नागरिक सेवा का गर्व, और राजा के निरंकुश शक्ति का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण ही था।

उसने अपने सिद्धान्तों के निरूपण में इतिहास और पर्यवेक्षण का सहारा लिया था कि धार्मिक सिद्धान्तों का।